

श्री वर्तमान चौबीसी पूजन

(कविवर वृन्दावनदास कृत)

वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुराय ॥
विमल अनन्त धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

मुनि-मन-सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।

भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा ॥

चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।

पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा ।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर-रंग भरी ।

जिन-चरनन देत चढ़ाय, भव-आताप हरी ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल सित सोम-समान सुन्दर अनियारे ।

मुक्ता फल की उनमान पुञ्ज धरों प्यारे ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

वर-कंज कदम्ब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे ।

जिन-अग्र धरों गुन-मण्ड, काम-कलंक हरे ॥चौबीसों ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन-मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।

रस-पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेन्द्र अर्चना 121